30-4-67 3/4/67 ओम शान्ति रात्रि क्लास

बच्चों को अपना-2 अनुभव तो अभी यही बताना है कि हम कलियुगी मनुष्य से सतयुगी दैवता बन रहे है। बड़ी खुशी की बात यह है। यह बात सिवाय तुम्हारे और कोई सुना नही सकते। कैसे बनते है वो समझाना चाहिये। यह अनुभव बताते हो कि किसने हमको रास्ता बताया। बाबा से फिर पूछेंगे कि बाबा ने कैसे प्रवेश किया। तुम्हारा अनुभव अपना, इनका अनुभव फिर सबसे निराला है। यह बतावेंगे कि बापने प्रवेश किया, और कैसे किया कब किया वो तो बता नही सकेंगे। आवाज सुनाया जाता है जब सा० हुआ। अभी समझते हो कि ऊँच ते ऊँच शिव है। उसने ही ऊँच बनाया है। बाप कहते है मेरा जन्म तो गाया हुआ है शिव जयंति। उसके बदले फिर कृष्ण जयन्ति का गायन कर दिया है। अभी बच्चे समझते है कि गीता का भगवान तो वो है जो सभी का फादर है। कृष्ण सभी का फादर नही है। कृष्ण चरित्र का खेल दिखाते है ना। शिव के चरित्र क्या दिखावेंगे। दिखला नही सकते। चरित्र वास्तव में तो हर एक का अपना-2 होता है। नाटक में हर एक अपना-2 चरित्र बनाते है जो पार्ट मिला हुआ है। तुम जानते हो श्रीकृष्ण सतयुग का प्रिन्स है। बस और कोई चतुराई है नही। पतित पावन तो परमात्मा को ही कहते है। सारी पतित दुनिया के मनुष्यों का ले जाते है। यह है ऊँच ते ऊँच बाप का पार्ट। कहते है मैं भी ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ हूँ। ड्रामा में अनादी नूँधा है। इसलिये इसको अनादी अविनाशी वर्ल्ड ड्रामा गाया जाता है। इसका नाँ आद न अन्त है। फिरता ही रहता है। दुनियाँ में यह कोई नही जानते है सिवाय तुम्हारे। मनुष्य कहते है बाबा हमको पतित से पावन बनाओ। सन्यासी कहते है कि आत्मा पतित नही होती है। शरीर पतित बनता है। शरीर द्वारा ही पतितपना दिखाई पड़ता है। बाप कहते है करती सब कुछ आत्मा है। आत्मा ही पार्ट बजाती है शरीर द्वारा। बाप बच्चों को समझाते है अवगुण सारे तुम्हारी आत्मा में है। संस्कार आत्मा में रहते है। शरीर जल जावेगा हम संस्कार ले जावेंगे। तुम देहधारी की महिमा नही गाते हो। बाप सभी वेदों शास्त्रों का ब्रह्मा द्वारा सार सुनाते है। ब्रह्मा वा विष्णु नही समझाते है। भगवान बैठ समझाते है। ब्रह्मा विष्णु की नाभी कमल से नही निकला है। विष्णु का राज्य था। विष्णु पुरी। लक्ष्मीनारायण के पिछाड़ी भी विष्णु रखते है। उनके ही यह दो रूप है। बच्चे जानते है इन्होंने विष्णुपुरी का राज्य कैसे लिया फिर गंवाया कैसे? फिर से भी ले रहे है। तुम श्रीमत पर फिर से अपने दैवी स्वराज्य की स्थापना करते हो। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतनी ही 21 जन्मों के लिये ज्ञान रत्नों से झोली भरेंगे। यह एक-2 ज्ञान रत्न लाख-2 रुपये का है। वहाँ धन की गिनती नही होती है। अणगिनत है। पतित दुनियाँ का विनाश सामने खड़ा है। यह महाभारत लड़ाई की निशानी है विनाश की। फिर स्वर्ग के दरवाजे खुलने है। सुखधाम में तो है ही एक धर्म। बच्चों की सर्विस के लिये 12 चित्रों का कलैण्डर बनाया जावे तो वो बहुत अच्छा है। सारी रचना रचता का ज्ञान तुम्हारे पास होगा। तो फिर किसीको भी चलते फिरते फिर सहज समझा सकते है। दिन प्रति दिन सहज होता जावेगा। जल्दी-2 झाड़ बढ़ता जावेगा। उसके लिये युक्ति रची जाती है। बाप कहते है तुम मेरे पास आये हो। तुम भी पढ़ाई तो हम भी पढ़े। धर्म भी स्थापन करते हो राजधानी भी स्थापन करते हो। इसलिये ही रिलीजोपोलीटिकल स्प्रिचुअल नालेज गाया जाता है। आत्मा को अब बड़े बाप स्प्रिचुअल फादर से वर्सा मिलता है। तुम बच्चों को सुख बहुत है। इसलिये ही बाप कहते भी है कि तुम्हारा धर्म बहुत सुखों को देने वाला है। आगे चल कर सब समझ जावेंगे कि बरोबर अब विनाश होने ही वाला है। यह ब्र, कु, कु तो बैठकर नई रचना रच रही है। अभी तो यहाँ आराम से बैठे है। जब भीड़ लगेगी तो नीचे से लेकर क्यू लग जावेगी। भारी भीड़ में पढ़ाई थोड़ेई हो सकेगी। लाईफ अच्छी नही है। तुम्हारे में तो यह सब गुण है कि बड़े-2 दैत्य है। शास्त्रों में भी भगवान ने दैत्य की सेना ली है। बच्चे जानते है हमको बाबा गुल-गुल बना रहे है। बाबा हमारा बाप टीचर सतगुरु है। बाप हमको पढ़ाते है। माया बहुत दुस्तर है। भगवान पढ़ाते है। विश्व का मालिक बनाने तो भी माया

[illegible]